International Journal of Applied and Universal Research **E- ISSN No: 2395-0269**
Volume IV, Issue V, October 2017 Available online at: www.ijaur.com

"पिछड़े वर्ग के बालिकाओं की शैक्षिक प्रगति का अध्ययन"

डॉ. रमेश प्रसाद तिवारी
सहायक प्राध्यापक शिक्षाशास्त्र
श्रीयुत महाविद्यालय, गंगेव, रीवा (म.प्र.)

सारांश – शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओर मानव की अनन्त यात्रा है। शिक्षा व्यक्ति के सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति सही मायने में सामाजिक बन पाता है। शिक्षा से आशय किताबी ज्ञान से नहीं बल्कि शिक्षा से आशय ज्ञान, अनुभव एवं सीख से है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक जो कुछ सीखता है, अनुभव प्राप्त करता है, वही उसकी शिक्षा है। शिक्षा ही व्यक्ति के पद और प्रस्थिति का निर्धारण करती है।

मुख्य शब्द – मानव, शिक्षा, अनुभव एवं सीख ।

प्रस्तावना – शिक्षा ज्ञान के लिए नहीं बल्कि व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक एवं व्यक्तित्व के विकास के लिए भी आवश्यक है। शिक्षित व्यक्ति समाज में उच्च पद तो प्राप्त कर लेता है लेकिन व्यवहार और आचरण ठीक नहीं है तो, समाज में सम्मान नहीं मिलता। इसी परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है।'' अर्थात् जो व्यक्ति ज्ञान को अपने आचरण और व्यवहार में ढालता है वही शिक्षित है।

जीवन–निर्माण या व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से कितनी ही ऊँची शिक्षा दी जाय, कितने ही अच्छे एवं योग्य शिक्षकों का योग मिले किन्तु जब तक विद्यार्थी की भूमिका ठीक नहीं होती तब तक समय और श्रम का सही उपयोग नहीं हो सकता। जैन–आगम के उत्तराध्ययन में विद्यार्थी की अर्हता के कुछ मानदण्ड निर्धारित किये गये हैं। उनके अनुसार शिक्षा के योग्य वह विद्यार्थी होता है जो– (1) हास्य न करे, (2) इन्द्रियों और मन को नियंत्रित रखे, (3) किसी की गोपनीय बात का प्रकाशन न करे, (4) चरित्र से हीन न हो, (5) चारित्रिक दोषों से कलुषित न हो, (6) रसों में अति लोलुप न हो, (7) क्रोध न करे और (8) सत्य में रत हो। शिक्षा प्राप्त करने का उद्देश्य यदि केवल बौद्धिक विकास अथवा डिग्री पाना ही हो, तो यह दृष्टिकोण की संकीर्णता है, क्योंकि शिक्षा का सम्बन्ध शरीर, मन, बुद्धि और भाव–सब के साथ है। एकांगी विकास की तुलना शरीर की उस स्थिति के साथ की जा सकती है, जिसमें सिर बड़ा जा जाय और हाथ–पाँव दुबले–पतले रहे अथवा हाँथ–पाँव मोटे हो जायँ और सिरका विकास न हो। शरीर का असंतुलित विकास उसके भौड़ेपन को प्रदर्शित करता है, ऐसी दशा में व्यक्तित्व का असंतुलित विकास उसके भीतरी भौंड़ेपन की अभिव्यक्ति कैसे नहीं करेगा?

जीवन के समग्र विकास की दृष्टि से शिक्षा को रचनात्मक मोड़ देने के लिये आवश्यक है कि निर्धारित पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कुछ विशिष्ट प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाय। विशिष्ट प्रशिक्षण के क्रम में कुछ महत्वपूर्ण उपक्रम ये हैं – (1) जीवन–मूल्यों की शिक्षा, (2) मानवीय सम्बन्धों की शिक्षा, (3) भावनात्मक विकास की शिक्षा तथा (4) सिद्धान्त और प्रयोग के समन्वय की शिक्षा।

शिक्षा के पूर्ण होने के लिये उसमें पाँच प्रधान पहलू होने चाहिए। इनका सम्बन्ध मनुष्य की पाँच प्रधान क्रियाओं से होगा – भौतिक, प्रामाणिक, मानसिक, आन्तरात्मिक और आध्यात्मिक। साधारणतया शिक्षा के ये सब पहलू व्यक्ति के विकास के अनुसार एक के बाद एक करके कालक्रम से आरम्भ होते हें, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि एक पहलू दूसरे का स्थान ले ले, अपितु सभी पहलुओं को जीवन के अन्तकाल तक परस्पर एक–दूसरे को पूर्ण बनाते हुए जारी रखना चाहिये।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में औपचारिक शिक्षा का प्रचार बहुत तेजी से हुआ। शिक्षण संस्थाओं में वृद्धि हुई। ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्कूलों तथा महाविद्यालयों का निरन्तर विकास किया गया। भारतीय समाज में शिक्षा का निरन्तर विकास हो रहा है। किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में जितना शिक्षा का विकास होना चाहिए उतना तो नहीं है, लेकिन सरकार द्वारा निरन्तर प्रयास हो रहा है। पत्राचार एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से दूरदराज एवं दूर्गम इलाकों में उच्च शिक्षा सुलभ कराई जा रही है। शिक्षा की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए गाँव व कस्बों में भी शिक्षा केन्द्र खोले गये हैं।

विश्लेषण – शिक्षा व्यक्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। व्यक्ति के चहुमुखी विकास के लिए शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति को निम्न सारणी में प्रदर्शित किया गया है –

सारणी क्रमांक–1 शिक्षा के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्र.	शिक्षा समूह	संख्या	प्रतिशत
1.	साक्षर (शब्द ज्ञान)	126	42
2.	प्राथमिक	69	23
3.	माध्यमिक	57	19
4.	स्नातक	30	10
5.	परास्नातक एवं अन्य उच्च शिक्षा	18	6
	योग	300	100

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वे के आधार पर

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता 42 प्रतिशत साक्षर हैं। 23 प्रतिशत उत्तरदाता प्राथमिक स्तर, 19 प्रतिशत उत्तरदाता माध्यमिक स्तर व 10 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक एवं 6 प्रतिशत उत्तरदाता परास्नातक एवं अन्य शिक्षा प्राप्त किये हैं। सारणी से यह भी स्पष्ट हो रहा है कि अधिकांश 42 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षित तो हैं लेकिन उनके पास कोई औपचारिक प्रमाण–पत्र नहीं है। ये शासन की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से शिक्षित हुए हैं। तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट हो रहा है कि कोई भी उत्तरदाता अशिक्षित नहीं है। लेकिन उच्च शिक्षा में स्थिति काफी दयनीय है।

निष्कर्ष –

शासन की विभिन्न योजनाओं को संचालित करने के बावजूद भी पिछड़े वर्ग के बालिकाओं की शैक्षिक प्रगति की गति बहुत धीमी है जिसके कारण पिछड़े वर्ग की बालिकायें आर्थिक एवं सामाजिक रूप से अपने आपको स्थापित करने में सफल नहीं हो पा रही हैं। यदि इन्हें आर्थिक एवं सामाजिक रूप से मजबूत बनाना है तो उन्हें शासन की सभी योजनाओं को क्रियान्वित करने की आवश्यकता शोधार्थी द्वारा महसूस की गई।

अन्ततः यह कहना समीचीन होगा कि शिक्षा सभी के लिए आवश्यक है, शिक्षा सभी को आसानी से सुलभ हो इस हेतु शासन ने समय–समय पर शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया है। शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ होने पर ही हर एक इच्छुक व्यक्ति को अच्छी शिक्षा मिल सकती है।

संदर्भ –

1. भारत में नारी शिक्षा, जे.सी. अग्रवाल, वर्ष 2009
2. शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त, पाठक एवं त्यागी, वर्ष 2010
3. द वर्ल्ड क्राइसिस इन एजूकेशन, फिलिप एच कोपन्स, वर्ष 2010
4. ओलिव बैक्स–दि सोसियोलाजी आफ एजुकेशन, न्यूयार्क, वर्ष 2008महादेव प्रसाद – महात्मा गांधी का समाज दर्शन, हरियाणा साहित्य अकादमी प्रकाशन चण्डीगढ़।
5. सिन्हा डॉ. पी.आर.एन. एवं डॉ. इन्दूवाला – श्रम एवं समाज कल्याण, भारतीय भवन ठाकुर वाडी रोड पटना 2000।
6. अनुसंधान परिचय, पारस नाथराम, वर्ष 2009
7. रीवा : सांख्यकीय पृस्तिका, जनसम्पर्क विभाग, वर्ष 2012